## प्राकृत मुक्तक कविताना एक अमूल्य ग्रंथनी उपलब्धि तारागण

## महावादीन्द्र बप्पभट्टिसूरिकृत प्राकृत सुभाषित-संग्रह (शंकुक-संकलित)

हरिवल्लभ भायाणी

कवि बप्पभट्टि

जैन परंपरामां १३मी शताब्दीथी बप्पभट्टिसूरिनुं जीवनचरित्र मळे छे. जन्म गंगा-यमुना दोआबना एक गाममां. शिक्षण अने संस्कारग्रहण गुजरातना मोढेरामां. कार्यक्षेत्र मुख्यत्वे कनोज अने ग्वालियर. मैत्री अने आश्रय गुर्जर-प्रतीहार राजवी आम अपरनाम नागावलोक (एटले के नागभट्ट बीजा)नी साथे. एनो समय इ.स.७४४थी ८३९नो उत्तम किव तरीकेनी शताब्दीओ सुधी ख्याति.

## सुभाषितसंग्रह 'तारागण'

प्राकृत सुभाषितोना कोश तरीके 'तारागण'नी परंपरागत ख्याति होवा छतां तेनी कोई हस्तप्रत जाणवामां आवी न हती, के तेना स्वरूप, विषय अने विस्तार विशे पण आपणे तद्दन अंधारामां हता. पण १९७० लगभग बीकानेरना एक हस्तप्रतभंडारमां तेनी एक हस्तप्रत सद्गत अगरचंद नाहटाना ध्यानमां आवी. सद्गत प्रकांड विद्वान आदिनाथ उपाध्येए 'तारागण'ना संपादनकार्यनो आरंभ करेलो. छेवटे ए अधूरुं रहेतां में पूरुं कर्युं छे.

'तारगण' मां शंकुक नामना कविए बप्पभिट्टसूरिना आशरे ११६ सुभाषित संगृहीत कर्यां छे. अनुराग (संयोग, विरह, स्त्रीरूपवर्णन), अन्योक्ति, सञ्जन-दुर्जन, राज-चाटु जेवा परिचित विषयोने लगता सुभाषित प्राकृत मुक्तक कवितानी उच्च परंपरा जाळवे छे. एक तरफ हाल-सातवाहननी 'गाथा-सप्तशती' अने बीजी तरफ जयवल्लभकृत 'वज्जलग्ग' ए बेनी वच्चे 'तारागण'नो प्राकृत मुक्तकसंग्रह आवे छे. प्राकृत कविताना रसिक आस्वादको माटे 'तारागण' नूतन वानगीओनो रसथाळ नीवडे तेम छे.

'प्रभावकचरित' (इ.स. १२७८)ना 'बप्पभट्टिसूरिचरित'मां पूर्व परंपरानी सामग्रीनो उपयोग करीने आचार्य प्रभाचंद्रे बप्पभट्टिसूरिनुं जे विस्तृत चित्र आप्युं छे ते अनेक दृष्टिए महत्त्वनुं छे. तेमां बप्पभिट्टिनी विद्वत्ता, बुद्धिचातुर्य, किवत्वशक्ति, प्रतिहार राजा आम नागावलोक साथे तेनी मैत्री अने राजा उपर तेनो प्रभाव, मानीनता वगेरे विविध चारित्रगुणो रोचक प्रसंगो द्वारा प्रगट थया छे. कल्पना, दंतकथा अने इतिहासनुं आवा चित्रोमां मिश्रण तो होय ज, पण खास तो प्रभाचंद्रनी रचनाशिक अने चरित्रचित्रणनी शक्ति आपणी प्रशंसा मागी ले तेवी छे.

बप्पभट्टिनी कवित्वशक्तिना द्योतक होय तेवा अनेक प्रसंगो आपेला छे अने तेमना संदर्भमां बप्पभट्टिरचित अनेक संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश पद्यो आपेलां छे. ओगणचालीश जेटलां प्राकृत-अपभ्रंश पद्योमांथी केटलांक पद्यपूर्तिना परिणाम होईने आम राजा अने बप्पभट्टिनी संयुक्त रचना गणी शकाय.

प्रश्न ए छे के बप्पभट्टिने नामे अपायेलां आ पद्योने खरेखर तेमनी रचना गणवा माटे कोई बीजो तटस्थ अने श्रद्धेय पुरावो खरो ? बप्पभट्टिए 'तारागण', 'सरस्वतीदेवी स्तुति', 'शांतिदेवता स्तवन' वगेरे सहित बावन प्रबंधो रच्या होवानो चरितमां निर्देश छे. पण अत्यारे आपणने 'तारागण' अने 'सरस्वतीस्तुति' जेवी बेत्रण रचना ज मळे छे. एटले ज टांकेलां प्राकृत–अपभ्रंश पद्योना कर्तृत्वनो प्रश्न उपस्थित थाय छे.

टांकेलां पद्योमांथी एक अपभ्रंश पद्य अने एक प्राकृत पद्य हेमचंद्रे 'सिद्धहेम' व्याकरणमां टांकेलां अपभ्रंश उदाहरण-पद्योमां मळे छे. 'प्रभावकचरित', पृ. ८८ उपरनुं पद्य २१६ नीचे प्रमाणे छे.

> पइं मुक्काह वि वस्तरु फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताहं। तह पुण छाया जइ होइ तारिसी तेहिं पत्तेहिं॥

आ ज पद्य थोडांक पाठांतरो साथे 'सिद्धहेम' ८, ४, ३७० नीचे उदाहरण माटे टांकेलुं छे. तेनो पाठ नीचे प्रमाणे छे.

> पइं मुकाहं वि वस्तरु फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताणं। तुह पुणु छाया जइ होज्ज कह वि ता तेहिं पत्तेहिं॥

'प्रभावकचरित' प्रमाणे आम राजाए अणबनावने कारणे चाल्या गयेला बप्पभट्टिने जे अन्योक्ति संदेशामां पाठवी हती, तेना उत्तर रूपे मोकलेली गाथाओमां एक उपर्युक्त गाथा हती.

आम राजानी अन्योक्ति अपभ्रंश दोहा रूपे छे. ते नीचे प्रमाणे छे. छायह कारणि सिरि धरिअ , पंच्चिव भूमि पडंति । पत्तहं इह पत्तनण् (? णउं) , वरतरु काइं करंति ॥

अर्थ: तरुवरोए छाया अर्थे शिर पर धरेलां पत्रो पाकीने भूमि पर खरी पडे छे. पत्रोनुं आज पत्रत्व छे (तेमनो जातिस्वभाव छे); तेमां तरुवरो शुं करे ?

आना उत्तरमां बप्पभट्टि, कहेवरावे छे के 'हे तरुवर, ताराधी तजायेलां पत्रोनुं पत्रत्व कांई नाश पामतुं नथी, ज्यारे तारी एवी कोई छाया होय तो ते तारां पत्रोथी ज.'

आ रीते उपर्युक्त गाथा बप्पभट्टिना एक महत्त्वना जीवनप्रसंग साथे वणायेली होवाथी प्रस्तुत लागे छे. पण बीजे पक्षे 'प्रभावकचरित'मां बप्पभट्टिए रचेली सात गाथाओना जे प्रतीक आपेलां छे, तेमां आ 'पत्र' वाळी गाथानो निर्देश के प्रतीक नथी.

## 'तारागण'नी बेत्रण गाथाओनो अनुवाद

'जुओ, आ वर्षाकाळरूपी मालधारी आकाश-खेतरमां काळां वादळांनी भेंशोना धणने पवन-परोणे गोदावतो हांकी रह्यो छे.' (२६मी गाथा)

'जेटलो एने मारा पर प्रेम छे तेटलो प्रेम मारी पासेथी एने मळतो नथी-एवुं अमस्थुं ज पोताना मनथी मानी बेठेलां ए बंने जण नकामां दूबळां पडी रह्यां छे. (७३मी गाथा)

ए पतिपत्नीनां मन दरेक बाबतमां संवादी होवा छतां, एक बाबतमां तेमनी वच्चे विसंवाद छे: ए तेने, स्वामिनी माने छे, तो ते पोताने किंकरी.' (७२मी गाथा).